ग़दीर..... तारीख़ का नाक़ाबिले फ़रामोश वाक़ेआ

तज़हीब नगरौरी

18 ज़िलहिज्जह 10 हि0 को रसूले अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) अपनी ज़िन्दगी का आख़री हज करके अज़ीम क़ाफ़ले के साथ मक्का से वापस आ रहे हैं क़ाफ़ेला धीरे–धीरे वापस लौट रहा है रास्ते में ग़दीर का अज़ीम मैदान पड़ता है जब क़ाफला यहाँ पहुँचता है बस फौरन फरिश्तों के सरदार हज़रत जिबरईले अमीन (अ0) आयत लेकर नाज़िल होते हैं और रसूले अकरम (स0) से फ़रमाते हैं कि ऐ मुहम्मद (स0)! ख़ुदा आप पर सलाम भेजता है और कहता है किः

''ऐ हमारे रसूल (स0)! जो कुछ (अली अ0 के बारे में) आपके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल हुआ है उसे पहुँचा दें, अगर आपने ऐसा न किया तो गोया रिसालत का कोई काम ही नहीं किया''

इस आयत के मफ़हूम और ख़ास तौर पर आयत के लहजे को देखने के बाद मुरसले आज़म हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) इसी ग़दीर के मैदान में रुक गए चूँकि आपके क़ाफ़ले में तक़रीबन सवा लाख मुसलमान थे इसलिए क़ाफ़ला काफ़ी बड़ा था और इस क़ाफ़ले में आगे रहने वाले लोग ग़दीर से गुज़र कर हजफा तक पहुँच गये थे और बाज़ अभी ग़दीरे ख़ुम के इलाक़े तक पहुँचे ही नहीं थे लिहाज़ा रसूले आज़म ने हुक्म दिया कि जो लोग आगे बढ़ गये हैं वह पीछे यानी ग़दीर तक वापस आ जाएँ और जो अभी पीछे हैं आए ही नहीं हैं उनका इन्तिज़ार करें ताकि वह सब एक ही जगह जमा हो जाए जब लोग एक साथ ग़दीर के मैदान में जमा हो गये तो पैग़म्बरे ख़ुदा (स0) ने चन्द ऊँटों के कजावों को इकटठा करवा कर मिंबर बनवाया और आप उस मिंबर पर मौलाए कायनात हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) को साथ लेकर तशरीफ़ ले गये और एक लम्बा खुतबा इरशाद फ़रमाया और मजमे से मुख़ातिब होकर कहा कि जिसका मैं मौला हूँ उसके यह अली मौला हैं परवरदिगार जो अली (अ0) को दोस्त रखे उसे तू भी दोस्त रख और जो अली (अ0) से दुश्मनी रखे उस से तू भी नाराज़ रह......... इसके बाद मुसलमानों ने मौलाए काएनात को मुबारकबाद भी पेश की ख़लीफ–ए–दोएम उमर ने भी मौलाए काएनात से कहा कि ऐ अली मुबारक हो आप आज से मुसलमानों के अमीर हो गये।

लेकिन अफसोस कि रसूले करीम (स0) की आँख बन्द होते ही नाम नेहाद मुसलमानों ने अपने वादे को भुला दिया और ख़िलाफत का बाज़ार गर्म हो गया और अली (अ0) को ख़ुदा के अता किये हुए हक़ से महरूम रखा गया जिसके नतीजे में कितनी ज़्यादा ख़राबियाँ पैदा हुईं उनका ज़िक्र इस मुख़्तसर मज़मून में करने की गुन्जाइश नहीं है मुख़्तसर यूँ समझिये कि इस मारका आराई का आख़री नतीजा यज़ीद की ख़िलाफत थी जिसे इमाम हुसैन ने कर्बला के चटियल मैदान में शिकस्त दी और हर दिल पर इस्लामी हुकूमत क़ायम कर दी।

मैदाने ख़ुम से लेकर मैदाने कर्बला तक
सब ने शिकस्त खाते देखा है दुश्मनी को

लेकिन आज जब इसी वाक़ेए को इस्लाम के अकसरियती फ़िरक़े के सामने बयान किया जाता है तो बाज़ इस वाक़ेए को मस्लहतन नज़रअन्दाज़ करने की नाकाम कोशिश करते हैं हालांकि इस वाक़ेए को ज़्यादातर अहलेसुन्नत के उलमा ने भी नक़्ल किया है और इस बात को

क़बूल करते हैं कि रसूले अकरम (स0) ने अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा के हुक्म से ग़दीरे ख़ुम में हज़रत अली (अ0) को अपना वसी व जानशीन मुक़र्रर फ़रमा दिया था। अहलेसुन्नत हज़रात के जिन आलिमों ने इस वाक़ए को अपनी किताबों में नक़्ल किया है उनमें से ख़ास–ख़ास लोगों के नाम कुछ इस तरह हैं।

1– तबरी (वफ़ात 310 हि0) ने ''किताबुल विलायह फ़ी तुरुक़े हदीसिल ग़दीर'' में।

2– हन्ज़ली राज़ी (वफ़ात 327 हि0)

3– महामली (वफ़ात 330 हि0) ने किताब ''अमाली'' में

4– हाफिज़ शीराज़ी (वफ़ात 407 हि0) ने किताब ''मा नज़ल फिल कुर्आन फी अमीरिल मोमिनीन'' में

5– इब्ने मरद्वैयह (वफ़ात 416 हि0)

6– सअ्लबी नीशापूरी (वफ़ात 427 हि0) ने ''अल–कश्फ वल बयान'' में।

7– अबुनईम अस्फहानी (वफ़ात 430 हि0) ने ''मा नज़ल मिनल कुर्आन फी अली'' में।

8– वाहिदी नीशापूरी (वफ़ात 468 हि0) ने ''अस्बाबुन्नुज़ूल'' में।

9– अबुसईद सजिस्तानी (वफ़ात 477 हि0) ने ''अलविलायह'' में।

10– हाकिम हस्कानी (वफ़ात पाँचवीं सदी के आख़िर में) ने ''शवाहिदुत्तन्ज़ील'' में।

11– इब्ने असाकर शाफ़ई (वफ़ात 571 हि0) ने ''अद्दुररुल मन्सूर'' और ''फत्हुल क़दीर'' की नक़्ल से।

12– नतन्ज़ी (वफ़ात छठी सदी हिजरी) ने ''अलख़साएसुल अलवियह'' में।

13– फख़्रे राज़ी (वफ़ात 616 हि0) ने ''अत्तफसीरुल कबीर'' में।

14– नसीबी शाफ़ई (वफ़ात 652 हि0)।

15– मूसली हम्बली (वफात 661 हि0) ने अपनी तफ़सीर में जिसका ज़िक्र ज़हबी ने ''तज़किरतुल हुफ्फाज़'' जि0–4 पे–243 में किया है और इसकी तारीफ़ की है।

16– अबु इस्हाक़ हमवीनी (वफ़ात 732 हि0) ने ''फराएदुस्सम्तैन'' में।

17– सैय्यद अली हमदानी (वफ़ात 786 हि0) ने ''मवद्दतुल क़ुरबा'' में।

18– इब्ने ऐनी हनफ़ी (वफ़ात 855 हि0) ने ''उम्दतुल क़ारी फी शरहि सहीहिल बुख़ारी जि–8 पे–584 में।

19– इब्ने सबाग़ मालिकी (वफ़ात 855 हि0) ने ''अलफ़ुसूलुल मुहिम्मह'' में।

20– निज़ामुद्दीन नीशापुरी (वफ़ात आठवीं सदी हिजरी) ने ''अस्साएरुद्दायर'' में।

21– कमालुद्दीन मीबदी (वफ़ात 908 हि0 के बाद) ने ''शरहे दीवाने अमीरुल मोमिनीन'' में।

22– जलालुद्दीन सुयूती (वफ़ात 911 हि0) ने ''अद्दुररुल मन्सूर'' में।

23– अब्दुल वहाब बुख़ारी (वफ़ात 932 हि0) ने अपनी तफसीर में।

24– सैय्यद जमालुद्दीन शीराज़ी (वफ़ात 1000 हि0) ने ''अरबईन'' में।

25– मुहम्मद महबूब आलम (वफ़ात ग्यारहवीं सदी हिजरी) ने ''तफसीरे शाही'' में।

26– क़ाज़ी शौकानी (वफ़ात 1250 हि0) ने ''फत्हुल क़दीर'' में।

27– आलूसी बग़दादी (वफ़ात 1270 हि0) ने ''रूहुल मआनी'' में।

28– मुहम्मद बदख़्शानी (वफ़ात 12वीं सदी हिजरी) ने ''मिफ्ताहुन्नजात'' में।

29– कुन्दूज़ी हनफी (वफ़ात 1293 हि0) ''यनाबीउल मवद्दत'' में।

30– शैख़ मुहम्मद अब्दहु मिस्री (वफ़ात 1333 हि0) नें ''अलमनार'' में।

□□□